Class 10 Hindi Sparsh Chapter 1: कबीर – साखी (Kabir Ki Sakhi) – Notes, प्रश्न-उत्तर और MCQs (2026-27)

ये Kabir Ki Sakhi Class 10 notes (कबीर – साखी) CBSE कक्षा 10 हिंदी स्पर्श भाग 2 के पहले पाठ को पूरी तरह कवर करते हैं: कबीर का परिचय, सभी आठ साखियों का मूल पाठ और भावार्थ, काव्य-सौंदर्य, शब्दार्थ, NCERT प्रश्न-उत्तर, 10 MCQs और मुफ़्त PDF।

नीचे दी गई विषय-सूची से सीधे अपने ज़रूरी भाग पर जाएँ, या पूरे पाठ की तैयारी के लिए शुरू से अंत तक पढ़ें।

विषय-सूची (Table of Contents)

- पाठ परिचय (Chapter Overview)
- मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)
- काव्य-सौंदर्य
- साखी और संदेश: एक नज़र में
- प्रमुख प्रतीक
- शब्दार्थ (Word Meanings)
- लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)
- बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)
- त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)
- सारांश (Summary)
- परीक्षा टिप्स (Exam Tips)
- अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)
- निष्कर्ष (Conclusion)

सभी पाठों के नोट्स चाहिए? Nextoper पर पूरे Class 10 Hindi notes देखें – क्षितिज, कृतिका, स्पर्श और संचयन, पाठ-वार।

पाठ परिचय (Chapter Overview)

कबीर (लगभग 1398–1518) निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संत कवि थे। माना जाता है कि उनका पालन-पोषण काशी में नीरू-नीमा नामक जुलाहा दंपती ने किया और उनके गुरु रामानंद थे। उन्होंने बाहरी आडंबर, मूर्ति-पूजा, जाति-पाँति और धार्मिक कट्टरता का विरोध किया। उनकी रचनाएँ 'बीजक' में संकलित हैं, जिसके तीन भाग हैं: साखी, सबद और रमैनी। उनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है।

'साखी' शब्द 'साक्षी' से बना है, जिसका अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान। साखियाँ दोहा छंद में हैं। इन साखियों में मीठी वाणी, ईश्वर का घट-घट में वास, अहंकार का त्याग, ईश्वर-विरह, निंदक का महत्व, सच्चे ज्ञान (प्रेम) और मोह-माया के त्याग की शिक्षा दी गई है।

मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)

साखी 1: मीठी वाणी

- मूल पाठ: "ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ। अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ॥"
- भावार्थ: हमें अहंकार त्यागकर ऐसी मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे हमारा मन शांत रहे और सुनने वालों को भी सुख मिले।
- संदेश: मीठी वाणी से स्वयं और दूसरों दोनों को सुख मिलता है।

साखी 2: कस्तूरी और ईश्वर

- मूल पाठ: "कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियां देखै नाँहिं॥"

- भावार्थ: कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है, पर वह उसकी सुगंध से भ्रमित होकर उसे वन में खोजता है। उसी प्रकार ईश्वर हर प्राणी के भीतर है, पर लोग उसे मंदिर-मस्जिद और तीर्थों में ढूँढते हैं।
- संदेश: ईश्वर हमारे भीतर है; उसे बाहर खोजना व्यर्थ है।

साखी 3: अहंकार और ईश्वर

- मूल पाठ: "जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहिं। सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥"
- भावार्थ: जब तक मन में अहंकार (मैं) था, तब तक ईश्वर नहीं मिला। अहंकार मिटते ही ईश्वर मिल गए। ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश से अज्ञान का सारा अंधकार मिट गया।
- संदेश: अहंकार ईश्वर-प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है।

साखी 4: सुखिया और दुखिया

- मूल पाठ: "सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै। दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै॥"
- भावार्थ: संसार के लोग खाने-सोने में ही सुख मानते हैं और ईश्वर को भूले रहते हैं। कबीर दुखी हैं, क्योंकि वे ईश्वर के वियोग में जागते और रोते हैं।
- संदेश: सांसारिक सुख क्षणिक है; सच्चा भक्त प्रभु-मिलन के लिए व्याकुल रहता है।

साखी 5: विरह रूपी साँप

- मूल पाठ: "बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ। राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥"
- भावार्थ: ईश्वर-वियोग रूपी साँप जिस शरीर में बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता। राम का वियोगी जीवित नहीं रहता, और यदि रहता है तो पागल-सा हो जाता है।
- संदेश: ईश्वर-विरह की पीड़ा का कोई उपचार नहीं, केवल प्रभु-मिलन ही उपाय है।

साखी 6: निंदक का महत्व

- मूल पाठ: "निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ। बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥"
- भावार्थ: निंदा करने वाले को अपने पास, आँगन में कुटिया बनाकर रखना चाहिए। वह बिना साबुन-पानी के हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है, क्योंकि वह हमारी कमियाँ बताता है।
- संदेश: आलोचना से हमें सुधार का अवसर मिलता है।

साखी 7: सच्चा ज्ञान

- मूल पाठ: "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ। ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥"
- भावार्थ: मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़कर संसार मर गया, पर कोई सच्चा ज्ञानी नहीं बना। जो प्रिय (ईश्वर) के प्रेम का एक अक्षर पढ़ लेता है, वही सच्चा पंडित है।
- संदेश: पुस्तकीय ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण प्रेम और भक्ति है।

साखी 8: मोह-माया का त्याग

- मूल पाठ: "हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि। अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥"
- भावार्थ: कबीर कहते हैं कि उन्होंने ज्ञान रूपी जलती लकड़ी (मशाल) से अपना मोह-माया रूपी घर जला दिया है। अब वे उसका घर भी जलाएँगे जो उनके साथ भक्ति के मार्ग पर चलना चाहता है।
- संदेश: भक्ति के लिए मोह-माया का त्याग आवश्यक है।

काव्य-सौंदर्य

काव्य-सौंदर्य वाले प्रश्नों के लिए।

पक्ष	विवरण
भाषा	सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी)
छंद	दोहा (साखी)

रस	शांत रस; साखी 5 में वियोग
अलंकार	रूपक (बिरह भुवंगम, दीपक), अनुप्रास, दृष्टांत (कस्तूरी-मृग), पुनरुक्ति प्रकाश (घटि घटि, पढ़ि पढ़ि)
गुण	प्रसाद गुण
शैली	उपदेशात्मक

साखी और संदेश: एक नज़र में

त्वरित दोहराने के लिए।

साखी	संदेश
1	मीठी वाणी
2	ईश्वर घट-घट में
3	अहंकार त्याग
4	सांसारिक सुख क्षणिक
5	विरह की पीड़ा
6	निंदक का महत्व
7	प्रेम ही सच्चा ज्ञान
8	मोह-माया का त्याग

प्रमुख प्रतीक

प्रतीक	अर्थ
कस्तूरी	ईश्वर
मृग	अज्ञानी मनुष्य
दीपक	ज्ञान
अँधियारा	अज्ञान
भुवंगम	साँप (विरह)
मुराड़ा	जलती लकड़ी (ज्ञान)
घर	मोह-माया

शब्दार्थ (Word Meanings)

शब्द	अर्थ
बाँणी	वाणी
आपा	अहंकार
सीतल	शीतल
कुंडलि	नाभि
घटि घटि	कण-कण में

मैं	अहंकार
हरि	ईश्वर
अँधियारा	अंधकार
सुखिया	सुखी
भुवंगम	साँप
बौरा	पागल
निंदक	निंदा करने वाला
नेड़ा	निकट
आँगणि	आँगन
सुभाइ	स्वभाव
पोथी	पुस्तक
मुवा	मर गया
अषिर	अक्षर
पीव	प्रिय
मुराड़ा	जलती लकड़ी
तास	उसका

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर: मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार और क्रोध मिट जाता है, जिससे मन शांत रहता है। सुनने वाले को भी प्रसन्नता मिलती है, क्योंकि मधुर वाणी हृदय को सुख देती है।

प्रश्न 2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: यहाँ दीपक ज्ञान का और अँधियारा अज्ञान का प्रतीक है। जब मन में ज्ञान का प्रकाश होता है, तो अहंकार और अज्ञान का अंधकार मिट जाता है और ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

प्रश्न 3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर: अज्ञान और अहंकार के कारण हम ईश्वर को अपने भीतर नहीं पहचान पाते और कस्तूरी-मृग की तरह उसे मंदिर-मस्जिद और तीर्थों में खोजते रहते हैं।

प्रश्न 4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं?

उत्तर: जो खाने-सोने में मग्न है और ईश्वर को भूला है, वह संसार की दृष्टि में सुखी है; ईश्वर के लिए व्याकुल कबीर दुखी हैं। 'सोना' अज्ञान का और 'जागना' ज्ञान व ईश्वर के प्रति सजगता का प्रतीक है।

प्रश्न 5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर: कबीर ने निंदक को अपने पास रखने का सुझाव दिया है, क्योंकि वह हमारी कमियाँ बताकर बिना साबुन-पानी के हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है।

प्रश्न 6. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ' – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: कवि कहना चाहता है कि केवल पुस्तकें पढ़ने से कोई ज्ञानी नहीं बनता। जो ईश्वर के प्रेम का एक अक्षर भी समझ लेता है, वही सच्चा पंडित (ज्ञानी) है।

प्रश्न 7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है, जिसमें अवधी, ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी आदि का मेल है। भाषा सरल, सहज और उपदेशात्मक है तथा प्रतीकों और दृष्टांतों का सुंदर प्रयोग है।

प्रश्न 8. 'हम घर जाल्या आपणाँ' साखी का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीर ने ज्ञान की मशाल से अपना मोह-माया रूपी घर जला दिया है और कहते हैं कि जो उनके साथ भक्ति-मार्ग पर चलना चाहे, उसका मोह-माया रूपी घर भी वे जला देंगे। भक्ति के लिए सांसारिक मोह का त्याग आवश्यक है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

प्रश्न 1. कबीर की साखियों के आधार पर उनके विचारों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

- मीठी वाणी का संदेश आज के तनावपूर्ण समाज में बहुत ज़रूरी है।
- ईश्वर को भीतर खोजने का विचार धार्मिक आडंबरों के विरुद्ध है।
- अहंकार त्याग से व्यक्तिगत और सामाजिक शांति मिलती है।
- निंदक का महत्व स्वस्थ आलोचना को स्वीकार करना सिखाता है।
- प्रेम को सच्चा ज्ञान मानना आज के रटंत ज्ञान पर भी प्रश्न उठाता है।

प्रश्न 2. 'कस्तूरी कुंडलि बसै' साखी की व्याख्या कीजिए।

- कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है।
- उसकी सुगंध से भ्रमित हिरण उसे पूरे वन में खोजता है।
- इसी प्रकार ईश्वर हर प्राणी के हृदय में है।
- पर मनुष्य अज्ञानवश उसे तीर्थों और धार्मिक स्थलों में खोजता है।
- अलंकार: दृष्टांत, पुनरुक्ति प्रकाश (घटि घटि); संदेश: ईश्वर को भीतर खोजो।

प्रश्न 3. कबीर ने अहंकार और अज्ञान को दूर करने के लिए क्या उपाय बताए हैं?

- अहंकार त्यागकर मधुर वाणी बोलें।
- "मैं" का भाव मिटाएँ, तभी ईश्वर मिलेंगे।
- ज्ञान रूपी दीपक से अज्ञान का अंधकार दूर करें।
- निंदक को पास रखकर अपनी कमियाँ सुधारें।
- प्रेम का अक्षर पढ़ें और मोह-माया का त्याग करें।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)

1. कबीर किस भक्ति धारा के कवि थे?

(क) सगुण (ख) निर्गुण (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक

उत्तर: (ख) निर्गुण

2. 'साखी' शब्द किससे बना है?

(क) सखा (ख) साक्षी (ग) शाखा (घ) सखी

उत्तर: (ख) साक्षी

3. कस्तूरी कहाँ होती है?

(क) वन में (ख) हिरण की नाभि में (ग) फूलों में (घ) पेड़ों में

उत्तर: (ख) हिरण की नाभि में

4. साखी में दीपक किसका प्रतीक है?

(क) अज्ञान (ख) ज्ञान (ग) धन (घ) अहंकार

उत्तर: (ख) ज्ञान

5. 'बिरह भुवंगम' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) यमक (घ) श्लेष

उत्तर: (ख) रूपक

6. कबीर निंदक को कहाँ रखने की सलाह देते हैं?

(क) दूर (ख) आँगन में कुटी बनाकर (ग) मंदिर में (घ) गाँव से बाहर

उत्तर: (ख) आँगन में कुटी बनाकर

7. कबीर के अनुसार सच्चा पंडित कौन है?

(क) जो पोथी पढ़े (ख) जो प्रेम का अक्षर पढ़े (ग) जो धनवान हो (घ) जो उपदेश दे

उत्तर: (ख) जो प्रेम का अक्षर पढ़े

8. कबीर की भाषा कहलाती है

(क) ब्रज (ख) सधुक्कड़ी (ग) अवधी (घ) खड़ी बोली

उत्तर: (ख) सधुक्कड़ी

9. 'मुराड़ा' का अर्थ है

(क) घर (ख) जलती लकड़ी (ग) साँप (घ) दीपक

उत्तर: (ख) जलती लकड़ी

10. कबीर के गुरु माने जाते हैं

(क) वल्लभाचार्य (ख) रामानंद (ग) तुलसीदास (घ) नानक

उत्तर: (ख) रामानंद

त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)

- कवि: कबीर, निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा; गुरु रामानंद; बीजक (साखी, सबद, रमैनी)।
- साखी = साक्षी; दोहा छंद; सधुक्कड़ी भाषा।
- 1 मीठी वाणी; 2 कस्तूरी-मृग; 3 अहंकार-दीपक; 4 सुखिया-दुखिया।
- 5 बिरह भुवंगम; 6 निंदक नेड़ा; 7 पोथी पढ़ि; 8 घर जाल्या।
- अलंकार: रूपक, दृष्टांत, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश।

सारांश (Summary)

कबीर की साखियाँ जीवन के व्यावहारिक और आध्यात्मिक सत्य बताती हैं। वे अहंकार छोड़कर मीठी वाणी बोलने, ईश्वर को अपने भीतर खोजने और ज्ञान के दीपक से अज्ञान मिटाने की शिक्षा देते हैं। संसार खाने-सोने में सुखी है, पर भक्त ईश्वर-विरह में जागता है; विरह की पीड़ा का कोई उपचार नहीं।

कबीर निंदक को पास रखने, पुस्तकीय ज्ञान के बजाय प्रेम को अपनाने और मोह-माया रूपी घर जलाकर भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

परीक्षा टिप्स (Exam Tips)

- हर साखी का भावार्थ और संदेश अलग-अलग याद करें।
- प्रतीक तालिका से 'दीपक', 'कस्तूरी', 'मुराड़ा' जैसे प्रश्न हल करें।
- काव्य-सौंदर्य में भाषा, छंद, रस, अलंकार चारों लिखें।
- साखियों को सही वर्तनी के साथ लिखने का अभ्यास करें।
- कबीर के विचारों की प्रासंगिकता पर दीर्घ उत्तर तैयार रखें।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

इस पाठ का मुख्य संदेश क्या है?

मीठी वाणी, अहंकार त्याग, ईश्वर को भीतर खोजना और प्रेम को सच्चा ज्ञान मानना।

क्या यह पाठ 2026-27 सिलेबस में है?

हाँ, यह CBSE हिंदी B की पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग 2 में है।

क्या इन नोट्स का PDF मिलेगा?

हाँ, ऊपर दिए लिंक से बिना साइनअप मुफ़्त PDF डाउनलोड करें।

निष्कर्ष (Conclusion)

कबीर की साखियाँ आज भी जीवन का मार्गदर्शन करती हैं। साखी-संदेश तालिका और प्रतीक दोहराकर इस पाठ के सभी प्रश्नों में पूरे अंक पाएँ।

और नोट्स (More Notes): Class 10 Hindi Sparsh Chapter 2: मीरा – पद notes | All Class 10 Hindi notes

लेखक परिचय (Author Bio): ये नोट्स Nextoper Editorial Team ने तैयार और जाँचे हैं – CBSE हिंदी शिक्षकों का समूह, जो NCERT पाठ्यपुस्तक और पिछले बोर्ड प्रश्नपत्रों के पैटर्न के आधार पर पाठ-वार नोट्स बनाते हैं।

अद्यतन जानकारी (Freshness Note): ये नोट्स NCERT कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग 2 (Reprint 2026-27, CBSE Hindi B) और 2026-27 सत्र के CBSE पाठ्यक्रम पर आधारित हैं। अंतिम जाँच: 10 नवंबर 2026।